विकास

न हो दर्पण की चाहत ढूंढता हूं
यहां मैं ऐसी सूरत ढूंढता हूं

पिता बेटे से अक्सर बोलते हैं
तुम्हारे घर में इज़्ज़त ढूंढता हूं

कहां मुमकिन किसी से इश्क कर लूं
सियासी हूं सियासत ढूंढता हूं

कबूतर आते अपनी प्यास लेकर
मैं जाने क्यों भला खत ढूंढता हूं

नई छत पर कहां हैं फूल गमले
पुराने दौर की छत ढूंढता हूं

सदरे आलम गौहर

सुकूं एक पल भी मयस्सर नहीं है
सुरक्षित यहां अब कोई घर नहीं है

खुले आम फिरते हैं कातिल शहर में
मैं कैसे कहूँ कि मुझे डर नहीं है

ये पूछो है जिसने एटम बम बनाया
कहीं इस ज़मीं पर तेरा घर नहीं है

न देगी तेरा साथ भी जिंदगी ये
खुदा से डरो गर तुझे डर नहीं है

ऐ कातिल जिसे मौत ने हो न देखा
बनाया किसी ने वह बंकर नहीं है

नज़र अपनी बोलो कहां ले के जाऊं
खुशी दे कोई ऐसा मंज़र नहीं है

दिया है तुम्हें रखो इस को संभाले
ये दिल है मेरा कोई पत्थर नहीं है

मेरे दर्द की इंतहा हो गई अब
मेरे ज़ख्म का कोई नश्तर नहीं है?

गले मिलने की बात होती थी पहले
पुराना ज़माना ये "गौहर" नहीं है

ISSN:2583-8849